अन्

पोवारी दिवस

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ भारत का सप्पाई कार्यकारिणी पदाधिकारी अन् सदस्यगण करलका् पोवारी दिवस अन् हिंदू नववर्ष की लगीत लगीत बधाई अन् हार्दिक शुभकामना

जय सम्राट विक्रमादित्य

जय श्रीराम जय राजाभोज

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

सबला विक्रम सम्वत हिंदू नववर्ष अना पोवारी दिवस की हिरदा लका बधाई

(पञ्चचामर छंद)

गुढी पँवार वंश की, सजावु आज रंगमा |
पँवार दिन मनावु मी, खुशील् आज संगमा ||
चईत शुक्ल पाडवा, उभी नवी गुढ़ी करो |
नवा बिचार संगमा, सुधारनी कड़ी धरो ||१||

मिलेव आज राम ला, किरीट राजपाट को |
खुसी मनावु याद मा, मनावु साल थाट को ||
सिहारपाठ जायके, करू दिदार राम को |
मिले कृपा सपा सरे, तनाव पूर्ण काम को ||२||

प्रसाद ब्रह्मदेव को, रचीस आज सृष्टि ला |
नमावु माथ प्रेम को, वको विशाल दृष्टि ला ||
भयेव सम्वता सुरू, विक्रामदेव राज को |
करूसु मान आज मी, प्रभू शकारि काज को ||३||

तिव्हार देविमाय को, मनावु आज पासना |
करू उपास शक्ति की, अना लगावु साधना ||
पँवार देवि कालिका, करूसु आज प्रार्थना |
सुखी करो समाज ला, करो कबूल याचना ||४||

*© इंजी. गोवर्धन बिसेन "गोकुल"

विक्रम संवत नववर्ष अना पोवारी दिवस उपलक्ष मा एक कविता

पोवार चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य विक्रम संवत निर्माता.
उनको याद मा पोवार दिवस मानवन निकलेव पोवार समाज लेयकर धर्म ध्वज पताका.

भारत को अनसुन्या पात्रल अवगत करावसु.
सृष्टी जेला कर नमन परिचय उनको करावुसु.

नाव बन गयेव उपाधि चारही दिशा फैलेव साम्राज्य होतो.
चक्रवती सम्राट विक्रमादीत्य अखंड भारत को निर्माता होतो.

जन्म लेईन उज्जैन मा देवतुल्य गुणवान होता.
शक्तिल उनको धरा कांप बचपन लकाच वोय महान होता.

पर विपत्ती होती विशाल शक इनन टाकी होतिन घेरा.
पूर्ण भारत ला बनाई होतिन उनन डेरा.

तब देखकन क्रूरता उनकी विक्रमादित्य को सब्र टूट गयेव.
धर कर हाथ मा रणचंडी तलवार ललकार मारकन अड़ गयेव.

आता तलवार जो निकली म्यान लका खून की नदी बह गई.
शकों का शव ला देखकन लग जसो मृत्यु धरा पर आय गई.

शक इनल मुक्त भयेव भारत आता सिंहासन उनन सम्हाली होतिन.
कालिदास वराहमिहिर सारखा नौरत्न बनाय विक्रम संवत उनन चलायी होतिन.

पोवार वंश का वोय शिरोमणि, मानत प्रभु श्री राम आपलो पूर्वज.
करिन उनन अयोध्या नगरी को पुर्ननिर्माण, महाकाल उनका कुलदैवत.

कुलदेवी माता हरसिद्धि का वोय मोठा उपासक.
उज्जैन धार नगरी का वोय उत्तम शासक.

अखंड भारत को उनन करिन अरब मिश्र इंडोनेसिया वरि विस्तार.
राज्य ला करिन विशाल देईन नविन आकार.

जँहा भी उनन पाय ठेईन उनको उनन कल्याण करिन.
मिल जायेति येका साक्ष्य तुर्की मा जिनन उनको गुणगान करिन.

मालवा का पोवार शासक मानत विक्रमादित्य ला आपलो पूर्वज.
सुशोभित करत "पृथ्वी तंणा पंवार" उक्ति गरज गरजकर.

पन वामपंथी इनन खेल रचिन षड्यंत्र असली इतिहास भुलावन को.
शाश्वत सनातन ला छोटो देखायकन जन् जन् मा ल भुलावन को.

मिटी वा छठा आता निकल्या पोवार वीरवर.
सच्चो इतिहास होये उजागर आता चाहुवोर.

36 कुल पोवार गर्वान्वित होयसानी उनको यादमा मानवसेत
पोवार दिवस नववर्ष विक्रम संवत पर.
आपलो जीवन सार्थक कर सेत पोवार समाज मा जन्म होन पर.

✒️ ऋषिकेश गौतम (7-अप्रैल-2024)

पोवारी दिवस

पो
वा
री
दि
व
स

सबजन कबलो एक नवस,
माय पोवारी को से दिवस ॥

सब घर मनावसेती अवस,
हिंदू नववर्ष पोवारी दिवस ॥

सूर्य को तेज समान दिवस,
धर्म रक्षा करन को दिवस ॥

पोवारी ध्वज को से दिवस,
सबजन कबलो एक नवस ॥

मायबोली को अस्मिता दिवस,
आय गयव पोवारी को दिवस ॥

जानो काहे से यव पोवारी दिवस,
आमरी बोली भाषा को दिवस ॥

बोलो पोवारी आता हर दिवस,
पोवारी सकार को आय दिवस ॥

सबजन कबलो आता एक नवस,
हिंदू नववर्ष आय पोवारी दिवस ॥

विक्रम संवत्
२०८१
अन्
पोवारी दिवस
अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ भारत का सप्पाई कार्यकारिणी पदाधिकारी अन् सदस्यगण करलका पोवारी दिवस अन् हिंदू नववर्ष की लगीत लगीत बधाई अन् हार्दिक शुभकामना
जय सम्राट विक्रमादित्य
जय श्रीराम जय राजाभोज
अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

डॉ. हरगोविंद चिखलु टेंभरे
मो.९६७३१७८४२४
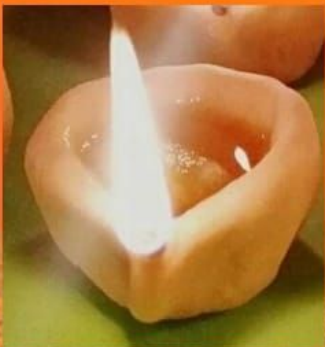
पोवारी दिवस

सृष्टि मा बसंत ऋतु को सौंदर्य से
(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले
पोवारी भाषिक, सांस्कृतिक, वैचारिक क्रांति अभियान, भारतवर्ष/रवि.१२/०३/२०२३.

सृष्टि मा बसंत ऋतु को सौंदर्य से।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को दिन से।
हिन्दू नववर्ष दिन की शुरुआत से।
असो शुभ दिन ला से पोवारी दिवस,
समाज सातो या गौरव की बात से॥

सृष्टि मा बसंत ऋतु की बहार से ।
प्रभु श्रीराम को विजयोत्सव से।
विक्रमादित्य को विजयोत्सव से।
असो पावन दिन ला से पोवारी दिवस,
समाज साती या गौरव की बात से॥

सृष्टि मा बसंत ऋतु को उल्लास से।
चैत्र नवरात्रि पर्व को शुभारंभ से।
विश्व ज्योतिष दिवस को उत्सव से।
असो मंगल दिन ला से पोवारी दिवस,
समाज साती या गौरव की बात से॥

सृष्टि मा रंगीबेरंगी माहौल से।
सृष्टि को उत्पत्ति को पावन दिन से।
सूर्य को उत्तरायण को महापर्व से।
येन् दिवस मनावबी पोवारी दिवस,
समाज साती या गौरव की बात से॥

पोवार शिरोमणि सम्राट विक्रमादित्य

|| पोवारी दिवस ||
पोवार समाज की वास्तविकता
(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)
पोवार आम्हीं, मातृभाषा पोवारी।
आराध्य आमरा श्रीराम धनुष धारी।
श्री रामायण अना श्रीमद्भगवद्गीता,
ये श्रेष्ठ ग्रंथ आमरा कल्याणकारी ॥
संस्कृति आमरी से सुंदर मनोहारी।
राष्ट्र भक्ति की परंपरा से आमरी।
इतिहास मा करया संकटों को सामना,
हिम्मत आमरी अजवरि कभी न हारी ॥
कर्म प्रधान सोच रहीं सदा आमरी।
आम्हीं सेजू संस्कृति का सच्चा प्रहरी।
अजिंक्य से सदा आमरी विचारधारा,
शक्तिस्थान से आमरों सुदर्शन धारी ॥
इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले
गुरु 9/3/2023.

पोवारी
दिवस
क्षत्रिय वंश की अस्मितासाठी

♦️ पोवारी दिवस की व्याख्या ♦️

❤️💚💜पोवारी दिवस या संकल्पना केवल मातृभाषा पोवारी पुरती मर्यादित नाहाय. **पोवार समाज मा आपली ऐतिहासिक पहचान (मातृभाषा व समाज को नाव)को प्रति निष्ठा विकसित करके भाषिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक स्वाभिमान विकसित करनो येव पोवारी दिवस को उद्देश्य व कार्य से. पोवार समाज को अतीत गौरवशाली होतो,येकी जाणीव कायम ठेयके समाज को उज्ज्वल भविष्य साकार करनो येव "पोवारी दिवस" मनावन को पावन लक्ष्य से.** 🔶🔷♦️
हर साल हिन्दू नववर्ष दिन ला पोवार समाज द्वारा पोवारी दिवस मनायेव जासे.-ओसीपटले

♦ ॥ पोवारी दिवस ॥ ♦

स्वागत से पोवारी दिन को
(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

स्वागत से पोवारी दिन को।
आनंदित मन से जन -जन को ॥

सूर्य उत्तरायण को दिन से।
सृष्टि मा उल्लास को संचार से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
आनंदित मन से जन-जन को॥

मां दुर्गा ला वंदन को दिन से।
प्रभु राम ला वंदन को दिन से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
मन आनंदित से जन -जन को॥

धार्मिक अस्मिता को दिन से।
भाषिक अस्मिता को दिन से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
मन आनंदित से जन -जन को॥

हिन्दुओं को पावन पर्व से।
पोवारी को पावन पर्व से।
मोठो दिन से पोवारी जागर को।
मन आनंदित से जन -जन को॥

-इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले
रवि.१९/०३/२०२३.
-----------💜💚💙💛❤️----------

रिद्धी दे सिद्धी दे

हे दुर्गे माता सर्व गुणो की माय तु ज्ञाता,
मन चित कर निर्मल निष्क्षल ध्यान दे
ज्ञान दे माय वरदाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

दुख दुर कर सुख भरपुर भर
तोरो गुण गान करू हे जगमाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

सज्जन ला हित दे सर्व पोवार कुटुम्ब ला
सुख दे प्रेम प्रीत की जोड़ दे गाथा,
रिद्धी दे सिद्धी दे
,
धर्म की जीत दे कर्म की रीत दे स्वस्थ तन मन दे ,
निरोगी काया माया दे भक्ति की छाया दे, हे भाग्यविधाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

जग मा मान सम्मान दे सुख समागम दे
शांति दे जगत जननी जन्मदाता हे माता,
रिद्धी सिद्धी दे,

निर्बल ला बल दे निर्धन ला धन दे
रोगी ला जोगी ला तार दे माता, हे जगमाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

भक्ति की शक्ति दे माय सत्य पथ प्रगती दे,
सत्यसनातन की अलख जोती दे माता,
हे जगमाता हे ममतामयी माता,
रिद्धी दे सिद्धी दे ,हे दुर्गे माता।।

जय माता दी 🚩🙏🚩
सबला नव वर्ष की मंगलमयी सुभकामना ज
विद्या बिसेन, बालाघाट🙏🚩

पोवार समाज की वास्तविकता

सनातन ही हमारा धर्म और संस्कृति है.
हमारे श्रेष्ठतम आराध्य प्रभु श्रीराम है.
यही ऐतिहासिक सत्य है. पोवार समाज
की वास्तविकता को परिभाषित करती हुई
एक कविता निम्नलिखित है-

पोवार हैं हम मातृभाषा हैं पोवारी ।
आराध्य हमारे श्रीराम धनुष धारी ।
श्री रामायण और श्रीमद्भगवद्गीता,
ये श्रेष्ठ ग्रंथ हैं हमारे कल्याणकारी ॥

संस्कृति हमारी हैं सुंदर मनोहारी ।
राष्ट्र भक्ति की परंपरा रही हमारी ।
इतिहास में किए संकटों का सामना,
हिम्मत अपनी हमने कभी न हारी ॥

कर्म प्रधान सोच रहीं सदा हमारी ।
हम हैं सदा संस्कृति के सच्चे प्रहरी ।
अजिंक्य है सदा हमारी विचारधारा,
शक्तिस्थान हैं हमारे सुदर्शन धारी ॥

इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले
गुरु.9/3/2023.

पोवारी दिवस

पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी
(भारतीय नववर्ष दिन, पोवारी दिन)

पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी॥

पोवारी दिन से पोवारी पहचान को।
पोवारी दिन से पोवारी स्वाभिमान को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी॥

येव दिन से पहचान को शंखनाद को।
येव दिन से स्वाभिमान को शंखनाद को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी॥

पोवारी दिन से भाषा को सम्मान को।
पोवारी दिन से भाषा को गौरवगान को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी ।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी॥

येव दिन से शक्ति की आराधना को।
येव दिन से श्रीराम की आराधना को।
पोवार समाज को मोठो दिन से पोवारी।
अस्तित्व बचावन को संकल्प से पोवारी॥

इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले
पोवारी भाषिक, सांस्कृतिक,
वैचारिक क्रांति अभियान, भारतवर्ष.
मंग.१४/०३/२०२३.

पोवारी दिवस

चलों! चलों! युवा साथियों तुम्हीं चलों
(भारतीय नववर्ष दिन,पोवारी दिन)

चलों!चलों! युवा साथियों तुम्हीं चलों।
आओ! पोवारी दिवस मनावन चलों।

तुम्हीं! ध्वजा पोवारी की धरके चलों।
यहां पोवारी को रंग बिखेरन चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओ ! पोवारी दिवस मनावन चलों॥

तुम्हीं! ध्वजा पूर्वजों की धरके चलों।
यहां एकता को रंग बिखेरन चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओं ! पोवारी दिवस मनावन चलों॥

तुम्हीं! पूर्वजों ला याद करके चलों।
यहां पूर्वजों की पहचान धरके चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओं!पोवारी दिवस मनावन चलों॥

तुम्हीं! पोवारी स्वाभिमान धरके चलों।
यहां पोवारी स्वाभिमान बढ़ावन चलों।
समाज की ऐतिहासिक पहचान धरके,
आओं! पोवारी दिवस मनावन चलों ॥

इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले
गुरु ९/३/२०२३.
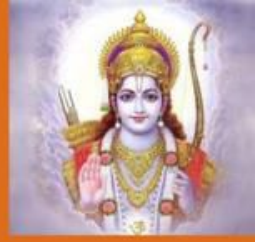
सनातनी हिंदुत्व के संरक्षक: पंवार (पोवार) क्षत्रिय

गुरु वशिष्ठ ने पवित्र पर्वत *आबूगढ़* में यज्ञ कर जनकल्याण के लिए अग्निवंशीय क्षत्रियों की उत्पत्ति की थी. यह कथा भले हीपौराणिक हो, लेकिन गुरु के उद्देश्य को उसके प्रमार शिष्य और उनके वंशजो ने अवश्य ही पूरा किया है. *पंवार वंशीय राजाविक्रमादित्य और राजा भृतहरि* ने विदेशी शकों को खदेड़ कर उज्जैन नगरी में सनातनी धर्म को पुनर्स्थापित किया था.

प्रमार वंशीय, गुरु भृतहरि ने समाज को भक्ति, ध्यान और अध्यात्म की शिक्षा दी. प्रमार सम्राट शालिवाहन ने सनातनी हिंदू धर्म केसंवर्धन के लिए अनेक कार्य किये.

सम्राट विक्रमादित्य के द्वारा *विक्रम संवत* और *सम्राट शालिवाहन* के द्वारा *शक संवत* पंचाग शुरू किये गए थे.

पहली शदी के आसपास राजपुताना मालवा में प्रमार/पंवार क्षत्रियों का परचम लहरा चूका था. मध्यकाल में *मालवा के राजा उपेंद्र, राजा शीयक, राजा मुंजदेव, राजा भोज, राजा नरवर्मन देव, राजा उदियादित्य, राजा जगदेव, राजा लक्ष्मण देव* जैसे अनेक वीर पुरुषों नेसनातनी धर्म और संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार किया.

राजा भोज के द्वारा धार में धर्म, ज्ञान, विज्ञान, कला और साहित्य के सृजन, विकास तथा प्रचार प्रसार हेतु *संस्कृत विश्वविद्यालय, भोजशाला* की स्थापना की गयी थी.

सम्राट विक्रमादित्य और सम्राट भोजदेव के द्वारा *चारों धामों का विकास* किया गया था. उनके द्वारा प्राचीन सनातनी मंदिरों कापुनर्निर्माण किया गया और अनेक नए मंदिरों की स्थापना की. सम्राट विक्रमादित्य ने अपने पूर्वज और आराध्य *भगवान श्रीराम की नगरीअयोध्या का पुनर्निर्माण* किया था. राजा भोज ने मुस्लिम आक्रांताओं को देश के बाहर खदेड़ दिया और *मालवा में एकल पत्थर से बनेसबसे बड़े शिवलिंग* की स्थापना कर भगवान सोमनाथ को भोजपुर में स्थापित कर विश्व को सन्देश दिया की ये यह सनातनी हिन्दुओंका देश हैं.

राजा मुंजदेव ने भी अनेक मंदिरों का निर्माण कर गुरु वशिष्ठ के स्वप्नों को पूर्ण कर *प्रमार वंशियों को ब्रह्मक्षत्रिय* कहा. *राजाजगदेव पँवार* के ज्ञान और दानशीलता के शौर्य की कहानियां आज भी पुरे देश में गायी जाती हैं. उनकी *आराध्य देवी मां कालिका* केउनके प्रेम और भक्तिवश अपने शीश को उनके चरणों में अर्पण की गाथा उन्हें दानवीर कर्ण के समकक्ष खड़ा कर देता हैं.

पँवार वंशियों ने हमेशा गुरु वशिष्ठ की संकल्पना को पूरा किया है और आज भी सनातनी हिन्दू धर्म की रक्षा और संवर्धन के लिए हरएक पँवार योद्धा सज्ज हैं. अपने *पूर्वज राजा प्रमार, जिसे इतिहासकार राजा धूमराज* भी मानते हैं, ने अपने गुरु, वशिष्ठ के धर्म कीरक्षा के स्वप्न को पूर्ण किया था. कालांतर में उनके वंशजों तथा अनुयायियों के महान कर्म के कारण ही कहा गया की, *पृथ्वी की शोभापंवारों से हैं.* आज उनके वंशजों से भी यही अपेक्षा है की वे अपने कुलगुरु और पूर्वजों के आदर्शों और संस्कारों को धारण करें तथासनातनी धर्म के संरक्षण और संवर्धन के प्रयास में एकीकृत होकर जुट जाये.

✍️*ऋषि बिसेन*
नागपुर

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ

नवो साल #पोवारी दिवस #

मोठो दुर्भाग्य की बात से,मन की पीड़ा से गहराई।
नकल लक् दुनिया से अंधरी, भुल गया आप्ली परछाई।।
अंग्रेजी नवो साल पर,दस दिन पहले हर्षाय जनमन।
सनातनी नवो साल पर, काहे सन्नाटा मा से मानुष मन।।
प्रकृति जश्न मनाय रही से, रंग रंग का फुल को साज लक्।
धरा ला उल्लास होय रही से, नवो साल को आगाज लक।।
पंचांग, नक्षत्र, पक्ष,संवत् , कसा भुलाया गया सनातनी।
विरासत अनजान भय गई, जीवन मा मची से तनातनी।।
नवो नवो चाल की नकल पर, नहीं कसी गई नकेल।
पुरानी संस्कृति समेटत गई, इतिहास कन् गई धकेल।।
जगत पिता को निर्माण लक्,आज उपज्यो होतो जग।
चयीत माह शुक्ल प्रतिपदा,शुभ घड़ी ना मुहूर्त को संग।।
देवी स्वरूपा जग जननी को, उपासना लक् शुरू नवोसाल
राम प्रभु,धर्मराज सहित राजतिलक, भयो होतोआज।।
आर्य समाज,आर एस एस को भी, नवो साल से जनक।
पुरातन संस्कृति लक् जो जुड़या, भगवान बन्या पालक।।
राजा विक्रम को प्रताप लक्,विक्रम संवत बन्यो महान।
गणना समय को पल पल की, भर्यो पुरो से विज्ञान।।
विदेशी सभ्यता विचार ला, आता तो करो राम राम।
राम जी अवध आय गया,मन ला बनाओं सनातन धाम।।
नवो साल मंगलमय होय,खुब होय धर्म की जयकार।
मन प्रफुल्लित तन निरोगी,सबका बढ़त् संस्कार।।

****

✍️यशवन्त तेजलाल कटरे ✍️

****

नवो साल को स्वागत लाई

पोवारी दिवस

९ अप्रैल २०२४

ऑनलाइन पोवारी साहित्य सम्मेलन

रात ८.३०बजे

- आयोजक -

अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार पोवार महासंघ

रिद्धी दे सिद्धी दे

हे दुर्गे माता सर्व गुणो की माय तु ज्ञाता,
मन चित कर निर्मल निष्क्षल ध्यान दे
ज्ञान दे माय वरदाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

दुख दुर कर सुख भरपुर भर
तोरो गुण गान करू हे जगमाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

सज्जन ला हित दे सर्व पोवार कुटुम्ब ला
सुख दे प्रेम प्रीत की जोड़ दे गाथा,
रिद्धी दे सिद्धी दे
,
धर्म की जीत दे कर्म की रीत दे स्वस्थ तन मन दे ,
निरोगी काया माया दे भक्ति की छाया दे, हे भाग्यविधाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

जग मा मान सम्मान दे सुख समागम दे
शांति दे जगत जननी जन्मदाता हे माता,
रिद्धी सिद्धी दे,

निर्बल ला बल दे निर्धन ला धन दे
रोगी ला जोगी ला तार दे माता, हे जगमाता,
रिद्धी दे सिद्धी दे,

भक्ति की शक्ति दे माय सत्य पथ प्रगती दे,
सत्यसनातन की अलख जोती दे माता,
हे जगमाता हे ममतामयी माता,
रिद्धी दे सिद्धी दे ,हे दुर्गे माता।।

जय माता दी 🚩🙏🚩
सबला नव वर्ष की मंगलमयी सुभकामना ज
विद्या बिसेन, बालाघाट🙏🚩

पोवारी दिवस : 13/04/2021
पंवार(पोवार) सम्राट विक्रमादित्य के
राज्याभिषेक और उनके द्वारा विक्रम संवत
की शुरुवात के साथ हिन्दू नव वर्ष की
शुरुवात का दिन

पोवारी दिवस
(०२/०४/२०२२)

क्षत्रिय पंवार(पोवार) समाज को आदर्श, सम्राट विक्रमसेन विक्रमादित्य न काल गणना लाई विक्रम संवत की स्थापना करि होतिन। यन पञ्चाङ्ग को प्रथम मास, चैत्र को प्रथम दिवस मा चैत्र नवरात्रि की शुरूवात होसे। यनच दिवस मा ब्रह्मा जी को द्वारा ब्रम्हाड़ की रचना भयी होती। भगवान सुर्यदेव को उदय को संग श्रष्टि को सृजन भयो। इतिहास मा दर्ज से की यन दिवस मा सम्राट विक्रमादित्य न आपरो भारतवर्ष ला विदेशी आक्रांताओं लका मुक्त करि होतिन अना एको बाद मा उनला पृथ्वी सम्राट कह्यो गयो। पोवारजन अज को गौरवशाली दिवस ला आपरी बोली अना सनातनी पोवारी संस्कृति को मान मा, चइत नवरात्रि को प्रथम दिवस अना गुड़ी पड़वा सन को दिनला, पोवारी दिवस को रूपमा मानसेती। आपरी गौरवशाली संस्कृति अना भाषा को संरक्षण अना संवर्धन लाई, पोवारी दिवस माननको विशेष महत्व रहे, असो मोरो विश्वास से।

सबला भारतीय नववर्ष, चैत्र रात्रि, गुड़ी पड़वा अना पोवारी दिवस की मंगलकामना

पंवार राजा भोज के द्वारा अपने
कुलदेवता का मंदिर भोजपुर
में बनाया गया।
जय महाकाल

राजा लक्ष्मण देव पंवार

मालवा नरेश राजा भोज के भतीजे, राजा लक्ष्मणदेव पंवार सन ११०४ में विदर्भ के राजा बने और उन्होंने राजधानी, नगरधन(नन्दिवर्धन) से मध्यभारत पर शासन किया।

क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज
नाम : पोवार(Powar) और पंवार/पँवार(Panwar)
धर्म : सनातन हिन्दू
कुलदेव: महादेव महाकाल
कुलदेवी: माँ काली भवानी
आराध्य देव : प्रभु श्रीराम
जय घोष: जय सियाराम, हर हर महादेव
मुख्य पूजा घर: देवघर
विशिष्ट दैवीयभोग - मयरी
विशेष पोवारी त्यौहार : डोकरी(क्षत्रिय माता) पूजा
कुल(कुर) : ३६
भाषा : पोवारी
मूल क्षेत्र: धारानगरी(मालवा)/राजपुताना
वर्तमान निवास : वैनगंगा क्षेत्र
(भंडारा, बालाघाट, गोंदिया, सिवनी)
पोवारी चौक : दिवाली का गायखुरी चौक
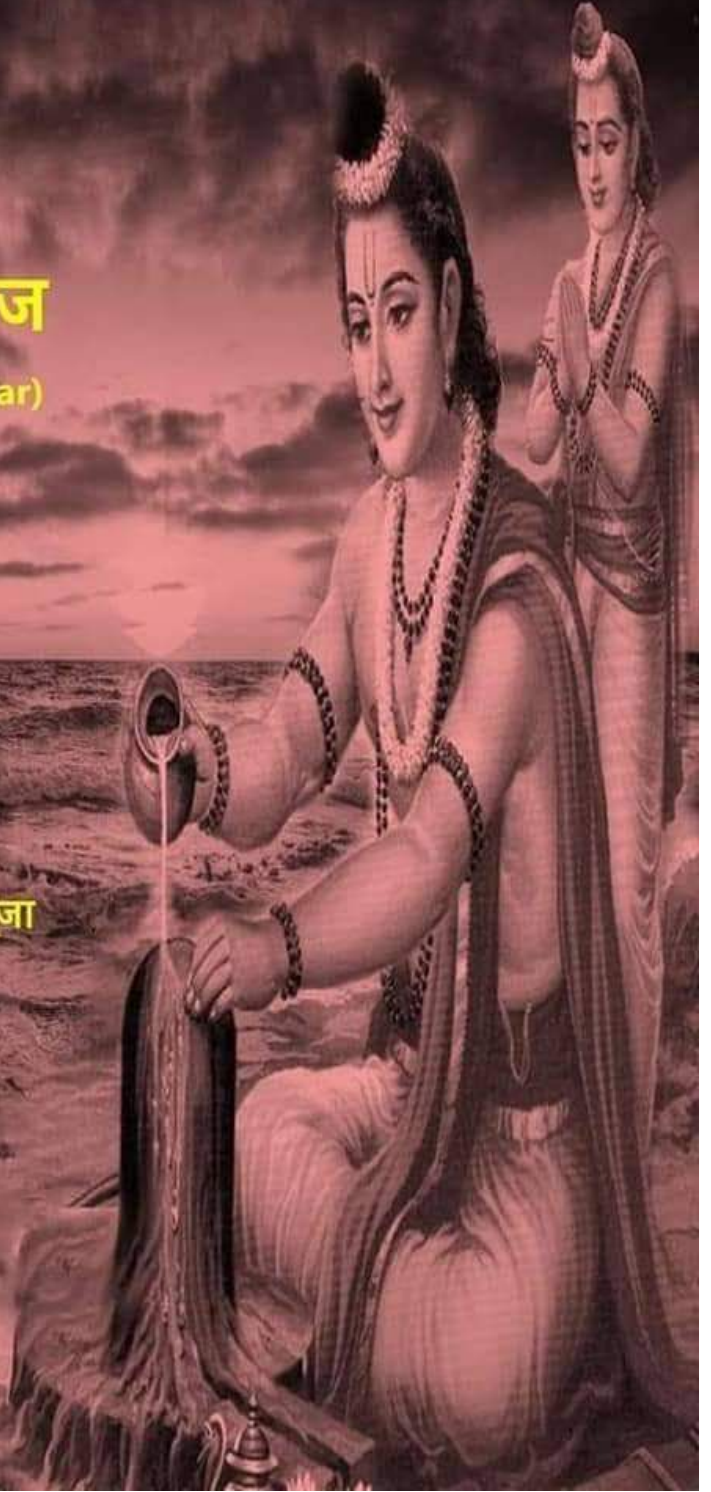
जय सियाराम

प्रभु श्रीराम पंवार(पोवार) समाज के आराध्य

पोवार समाज शिरोमणी सम्राट विक्रम विक्रमादित्य, प्रभु श्रीराम को अपना पूर्वज मानते थे और उन्होंने आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व उनकी **अयोध्या नगरी का पुनरुद्धार** करवाया था। पोवार(छत्तीस कुल पंवार) समाज के आदर्श, अवन्ति सम्राट विक्रम के द्वारा प्रभु श्रीराम को अपने पूर्वज और आदर्श माने जाने की परम्परा का निर्वहन करते हुए समाजजनों ने मध्यभारत में मराठा राजाओं के सहयोग से **रामटेक में भव्य राममंदिर** का निर्माण करवाया था। इसी प्रकार पंवारो के द्वारा नागपुर के भोसले शासक के सहयोग से बालाघाट जिले के **रामपायली किले पर राममन्दिर** का निर्माण करवाया गया था। इसी क्रम में हमारे पुरखों के द्वारा बालाघाट जिले के बैहर नगर की **सिहारपाठ पहाड़ी पर १९११ में राममंदिर का निर्माण** कार्य पूर्ण हुआ। इसी क्षेत्र में स्वजातीय भाई बहनों के द्वारा बालाघाट जिले के **मलाजखंड नगर में अपने आराध्य प्रभु श्रीराम के मंदिर** की स्थापना की। पोवारों के द्वारा सिहारपाठ पहाड़ी, बैहर और मलाजखंड में **प्रतिवर्ष रामनवमी को मेले का भी आयोजन** किया जाता है। इसके अतिरिक्त वैनगंगा क्षेत्र की पावन धरती पर अन्य समुदायों के साथ मिलकर भी अपने आदर्श **प्रभु श्रीराम के मंदिरों निर्माण में सहयोग** करते रहे हैं। कई पंवार बहन-भाइयों ने भी अपने निजी खर्च पर अपने आराध्य प्रभु श्रीराम के मंदिर स्थापित किये हैं। जैसे बालाघाट जिले के **ग्राम चिचगांव(लालबर्रा) में स्व. रूपा बाई पटले के द्वारा अपने निवास पर राम मंदिर का निर्माण** करवाया गया था जहाँ प्रतिवर्ष उनके कुनबे के द्वारा रामनवमी को विशेष पूजा अर्चना की जाती है।

तथ्य संकलन : ऋषि बिसेन, बालाघाट

पंवार(छत्तीस कुर पोवार) समाज का इतिहास
“पंवार जाति सुधारणी सभा”
छत्तीस कुल पोवारों के उत्थान के साथ समाज में फ़ैल रही सामाजिक बुराइयों को रोकने हेतु विधान बनाने के लिए, सन १९०० के आसपास, "पंवार जाति सुधारणी सभा" का गठन किया गया था। इस संस्था के द्वारा समाज की संस्कृति के रक्षण हेतु अनेक कार्य किये गए थे। "पंवार जाति सुधारणी सभा" के द्वारा मालवा-राजपुताना से आकर वैनगंगा क्षेत्र में बसे क्षत्रियों(राजपूत) के संघ, पंवार(पोवार)समाज में सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य किया और अपने आराध्य,प्रभु श्रीराम के सिहरपाठ, बैहर में मंदिर स्थापना के लिए, सन १९०७ में "पंवार राम मंदिर समिति" का गठन किया, जिसने सन १९११ तक सिहारपाठ पहाड़ी पर, राममंदिर निर्माण का कार्य पूर्ण किया।
अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार(पोवार) महासंघ

19:53 0.46 KB/S 74

जय सियाराम

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार/पंवार महासंघ के उद्देश्य तथा कार्य

१. भारत में फैले ३६ कुल पोवार/पंवार समाज जनों में संपर्क स्थापित कर एकता के सूत्र में बांधना तथा राष्ट्रीय स्तर पर एकता को मजबूत करना।

२. क्षत्रिय पोवार/पंवार समाज की सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं समग्र विकास में सहायता प्रदान करना।

३. क्षत्रिय पोवार/पंवार समाज की बोली जानेवाली मात्र बोली "पोवारी" के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कार्य करना।

४. पोवारी बोली के साहित्य को समृद्ध करना, आम जनमानस तक इसका प्रचार प्रसार करना।

५. पोवार समाज के सांस्कृतिक रीति-रिवाज, सभ्य प्रथाओं एवं नैतिक मूल्यों को सुरक्षा प्रदान करना।

६. सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर, जनजागृति के माध्यम से सुदूरवर्ती प्रसार प्रचार करना।

७. समाज के युवा एव महिला वर्ग में शिक्षा का प्रसार करना एव विविध योजनाओं तथा कौशल विकास पर मार्गदर्शन कर उनको संबल बनाना।

८. किसानों की खुशाली हेतु कृषि विकास की विभिन्न योजनाओ पर आधारित कार्यक्रम क्रियान्वित करना।

९. पोवारी लोककला और साहित्य संवर्धन के लिए विभिन्न पंवार बहुल स्थलों पर अधिवेशनों का आयोजन करना।

१०. पोवार समाज की विलुप्त हो रही संस्कृति को समृद्ध तथा सुरक्षा प्रदान करना।

११. समाज से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों पर खोज कर समाज के विभिन्न स्तरों पर स्थानीय संघटनो की मदद से प्रसार प्रचार करना।

१२. पोवार / पंवार समाज के युवक-युवतियों में सामाजिक शिक्षा का प्रचार प्रसार कर पोवारी संस्कारों से परिपूर्ण करना।

१३. समाज के उत्थान हेतु अधारभूत संरचनाओं का विकास करना।

१४. समाज के हर वर्ग के कल्याण हेतु प्रशासन के सहयोग से विभिन्न कार्यक्रमों को संचालित करना।

१५. पोवार समाज के जातिनाम (पोवार/पंवार) के अपभ्रंश को रोकना तथा पोवार/पंवार मूल रूप को स्थायित्व प्रदान करना.

१६. पोवार समाज मे नैतिक मूल्यों तथा समता भाव को प्रोत्साहित करना।

१७. पाश्चात्य संस्कृति से ह्रास होते संस्कारों को सहेजना।

१८. स्थानीय स्तर पर सामाजिक समितियों का गठन कर जनजागृति एवं प्रचार प्रसार करना।

१९. समाज के वरिष्ठजनो का सत्कार कर उनको मानसिक संबल प्रदान करना।

२०. समाज के विशिष्ट सेवा क्षेत्रो में कार्यरत समाजसेवीयो का आदर सत्कार कर सामाजिक कार्य हेतु प्रेरित करना।

२१. सामाजिक विकास हेतु साहित्यों के निर्माण एवं सरक्षण हेतु ई_बुक, सॉफ्ट एवं हार्ड कॉपी, सामाजिक पत्रिकाओं का प्रकाशन तथा वेब मीडिया द्वारा ऑनलाइन सेमिनारो का आयोजन करना।

२२. समाज के गरीब एवं होनहार विद्यार्थियों की आर्थिक कठिनाईयों को दूर करने हेतु उपाययोजना करना।

२३. शिष्यवृत्ती, पारितोषिक, एवं शिक्षा ऋण संबंधी सरकारी योजनाओं की जानकारियां प्रदान करना।

२४. उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए महानगरों में रहने की व्यवस्था करना।

मालवा राजपुताना से अठारवी सदी में नगरधन होकर वैनगंगा क्षेत्र में बसे छत्तीस कुर के क्षत्रियों का संघ

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ

चवरी की आस्था, कृपा अना परम्परा

चवरी की माती ला हामी 36 कुर्या पोवार काहे पूजा कर सेजन?

काहे येतरो महत्व से?

बिचार की बात से

बिचार करेव पर, आपला आराध्य दैवत श्री राम भगवान को एक प्रसंग ध्यान मा आयेव, ज़ब वनवास को बेरा भगवान श्री राम अयोध्या को सीमा को बाहर जान वाला होता तब जननी जन्मभूमि माती सीन विदा लेसेती अना बडा भावविभोर होयकन माती को टुकड़ा ला आपलो दुपटा अचला मा संरक्षित अना प्रणाम कर श्यानी सामने को वनवास करन निकल्या होता, अना प्रतिदिन वोन मायमाती की तिलक वंदना आराधना करकन वोकी याद करत होता. येव एक प्रसंग आपलो आराध्य दैवत भगवान श्री राम सीन अना माती की चवरी को पूजा सीन अना वोन आस्था सीन जुड़ेव लगसे.

तसो आपरो 36 कुर्या पोवार को यंहा बड़ो भाऊ (मोठो टुरा) घर मुख्य चवरी रवसे, अना बाकी भाऊ प्रतिक स्वरुप अलग होनो पर चवरी ठेवत सेती. पन कोनी नाहनो को घर पर लहान बाल बच्चा भया त दीवारी की खीर चाटावण साती मुख्य चवरी वालों घर आन सेती. कम जादा भई रहे त मालूम नहीं, पन या परम्परा आब भी 36 कुर्या पोवार मा चल रही से. देव उतराई त्यौहार मुख्य चवरी वालों को घर रवसे, बाकी लहान भाई देव उतारनो करनो नहीं करत. आता कोनी आपुन होयकन करत रहेत त वा अलग बात अना, अनखी एक बहुत महत्व पूर्ण बात, मुख्य चवरी मोठो भाई ला छोड़कन कोनी दुसरो नाहान भाई जवर भी रह सकसे, बशर्ते अलग होनो परा टुरा का माय अना अजी लाहानो जवर आपलो सामने को जीवन बितायी रहेती.

चवरी कोन जवर? को समाधान असो होतो की, चवरी मोठो जवर. पन यदि माय अना अजी न आपलो सामने को जीवन नाहानो जवर बिताइन त मुख्य चवरी नाहोनो को घर पर. कवनो को मतलब की यदि माय अना अजी न नाहानो टुरा ला आपरो संरक्षणमा ठेयसानी सामने को जीवन बिताइन त मुख्य चवरी नाहानो को घर मा स्थापित रवसे.

ऋषिकेश गौतम (17-अक्टूबर-2023)

(मीन आपलो पिताजी को द्वारा जानकारी को आधार लका संकलन करी सेव, बाकी सब आपलो आपलो आस्था साती स्वतंत्र सेती.)